सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास

a. भाषायी कौशलों का विकास
b. भाषायी कौशलों का महत्व
c. भाषा के कौशल
d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग
f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल
g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास

a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल
b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर
c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर
d. वाचन शिक्षण की विधियाँ
e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

a. लेखन कौशल
b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता
c. लेखन कौशल का महत्व
d. लेखन शिक्षण का समय
e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा
f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

2. भाषायी कौशल–उच्चारण या बोलने का कौशल

अर्थ–उच्चारण या भाषण का या वार्तालाप का अर्थ है 'बोलना'। बोलने में मौखिक अभिव्यक्ति है जिसमें ध्वनि व्यवस्था, बल, लय, स्वराघात, गीत और विराम का समुचित उपयोग करना ही उच्चारण/बोलना है।

भाषा शिक्षण में उच्चारण/बोलने का सबसे अधिक महत्व है। जैसे–

"यद्यपि बहुनाधीषे व्याकरणं पठ तथापि हे पुत्र।
स्वजनः श्वजनो या भूत सकलं शकलं सकृच्छकृत॥"

अर्थात् हे पुत्र ! यद्यपि तुमने बहुत अध्ययन कर लिया, लेकिन अब व्याकरण का भी अध्ययन करो जिसमें स्वजन (आत्मीयजन) के स्थान पर श्वजन (कुत्ता), सकल (सम्पूर्ण) के स्थान पर शकल (अंश या छोटा भाग–टुकड़ा) और सकृत (एक बार) के स्थान पर शकृत (अपृश्य मल या विष्ठा) न हो जाय।

अर्थात् उपर्युक्त श्लोक से पूर्णतः स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा शिक्षण में व्याकरण के स्थान पर भी शुद्ध उच्चारण का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि अशुद्ध उच्चारण व्याकरणसम्मत होते हुए भी अपूर्ण माना जाता है, क्योंकि उसका अर्थ श्रोता को समय में नहीं आता काफी प्रयत्नोपरान्त अर्थ समझा जा सकता है।

- शुद्ध उच्चारण ही भाषा के ज्ञान का आवश्यक अंग है तथा भाषा में सम्प्रेषण का प्रमुख हिस्सा (भाग) है।
- बालक जैसे ही बोलना सीखता है, अनुकरण से अपनी मातृभाषा सीख जाता है, लेकिन उस पर स्थानीय प्रभाव अवश्य होता है।

Scanned with CamScanner

- शुद्ध उच्चारण से भाषा सम्प्रेषण की बोधगम्यता आती है।
- शुद्ध उच्चारण से भाषा परिष्कृत तथा परिमार्जित होकर उसमें निखार आता है।
- अशुद्ध उच्चारण सुनने में भी अच्छा नहीं लगता तथा भावार्थ ही बदल जाता है जिससे शुद्ध सम्प्रेषण भी सम्भव नहीं हो पाता है।

मौखिक अभिव्यक्ति—मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में रहकर ही करता है और इन आवश्यकताओं की पूर्ति, समाज के सदस्यों से परस्पर सम्पर्क बनाकर ही करता है और सभी सदस्य आपसी सम्पर्क सिर्फ भाषाओं के माध्यम से ही बनाते हैं जिसका प्रथम रूप मौखिक या वार्तालाप या बोलने का कौशल है। दूसरा रूप लिखित भाषा द्वारा है। यहाँ हम मौखिक अभिव्यक्ति की चर्चा कर रहे हैं।

बोलना-अर्थ—बालक सुनते-सुनते एक वक्ता की तरह बोलने का स्वतः ही प्रयत्न करता है तथा शिक्षक तो सिर्फ ऐसा ही यत्न करे कि बालक शुद्ध उच्चारण करे। प्रारम्भ में तो बालक तुतलाकर अशुद्ध उच्चारण करता है, लेकिन शिक्षक धैर्य के साथ, बालक के साथ सहानुभूति रखते हुए, बालक के अपूर्ण प्रयास की सराहना करते हुए उसे शुद्ध बोलने के अत्यधिक अवसर दिये जाएँ ओर बालक जो भी कहना चाहता है उसे सुने और उसके अशुद्ध उच्चारण पर हँसी न करे, क्रोध न करे बल्कि प्रोत्साहित करके सुधार कराये।

इसी प्रकार हम ये भी कह सकते हैं कि समाज द्वारा स्वीकृत ध्वनि-संकेतों के माध्यम से मानव अपने हृदय के भावों को प्रकट करता है। उसे ही मौखिक-अभिव्यक्ति या बोलना कहते हैं। मौखिक भाषा का उपयोग हम हमारे दैनिक जीवन में बातचीत, भाषण या आदेश देने में करते हैं। अतः यह हमारे दैनिक जीवन का अंग है।

प्रो. रमन बिहारी लाल ने लिखा है कि "भाव व अपने हृदय के भावों को व्यक्त करने के लिए जिस ध्वनि रूपी साधनों या संकेतों का प्रयोग करता है उसे ही मौखिक भाषा या बोलना कहते हैं। वे ध्वनि संकेत समाज द्वारा स्वीकृत होते हैं।"

इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि मानव अपने विचारों, मनोभावों तथा अनुभूतियों की अभिव्यक्ति मौखिक रूप से उच्चारित या बोलकर व्यक्त करता है, क्योंकि मौखिक अभिव्यक्ति सरल, सहज एवं पर्याप्त होती है तथा इसके लिए कोई विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं होतीं। मानव को प्रतिदिन काफी मात्रा में मौखिक अभिव्यक्ति करनी पड़ती है अर्थात् मौखिक भाव प्रकाशन के लिए निम्न दो उपादानों का होना अनिवार्य है—

- अपने विचारों व भावों को मौखिक रूप में दूसरों के सम्मुख प्रकट करना।
- दूसरों के मौखिक विचारों को सुनकर उनका भाव अर्थपूर्ण ढंग से ग्रहण करना।
- इन दोनों उपादानों की मौखिक अभिव्यक्ति ही श्रेष्ठ है।

प्रक्रिया—प्रारम्भ में बालक मूर्त, परिचित वस्तुओं के नाम, रंग, आकार, कार्य आदि पर बातचीत करके बालक की बोलने की झिझक दूर करे तथा बाद में वह छोटी-छोटी कहानियाँ, चुटकले सुनाने को कहा जाय और फिर बालगीत, प्रमाणगीत को कक्षा के छात्रों के सामने ही प्रस्तुत करे। उन्हें अनुकरण व वाचन का खूब अवसर दिया जाये। उससे प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करे, बालसभा में बोलने के लिए प्रेरित करे, प्रश्नों के उत्तर तथा संवाद पाठों का शिक्षण कराकर बालकों को बोलने के कौशल का विकास कराया जाय, इसके लिए निरन्तर अभ्यास की अति आवश्यकता है।

Scanned with CamScanner

महत्व—हिन्दी भाषा शिक्षण में मौखिक भाषा या बोलने का अत्यधिक महत्व है, जो निम्न प्रकार है—

(1) मौखिक भाषा सरलता तथा शीघ्रता से समझी जा सकती है। पढ़ने के अभ्यास में सर्वप्रथम अक्षर ज्ञान, फिर उसे उच्चारण का उचित अभ्यास, अन्त में दोनों को मिलाकर पढ़ना पड़ता है, लेकिन मौखिक भाषा में दूसरों का ही अनुकरण करके इसे सीखा जाता है।

(2) सर्वप्रथम बालक मौखिक भाषा ही सीखता है, उसी का अधिक-से-अधिक विकास करने से यह स्वाभाविक तथा सरल हो जाती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अधिकांश बालकों में इसे अनुकरण की प्रवृत्ति से अधिक सीखा जाता है। अतः मौखिक भाषा अनुकरण प्रधान है।

(3) बालक को लिखने-पढ़ने से पूर्व मौखिक भाषा का अभ्यास करना अति आवश्यक है। भाषाओं का प्रारम्भ कान व जिह्वा से हुआ है। सर्वप्रथम बालक परस्पर वार्तालाप से बोलना सीखता है, फिर लिखना व पढ़ना बाद में सीखता है। अतः आवश्यक है कि बालक पहले वार्तालाप में निपुण हो।

(4) दैनिक व्यावहारिक जीवन में मौखिक भाषा का जितना अधिक प्रयोग होता है उतना लिखित भाषा का नहीं होता है। अधिकांश बातें मौखिक जितनी स्पष्ट की जा सकती हैं उन्हें लिखित रूप में उतना स्पष्ट नहीं कर पाते हैं।

(5) मौखिक भाषा ही व्यक्तियों के सम्बन्धों को अधिक दृढ़ बनाती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अतः वह सुख का अनुभव करता है तथा दुःख में हाथ बाँटता है, उसे सांत्वना देकर आत्मसन्तोष अनुभव करता है। इस प्रकार सिर्फ मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा ही एक-दूसरे के सामने अपने विचारों को प्रकट कर सामाजिक ढाँचे को मजबूत बनाता है, क्योंकि समाज एक सामाजिक सम्बन्धों का जाली ही है।

(6) व्यावहारिक जीवन तभी सफल माना जायेगा जब बोलचाल या वार्तालाप में सफलता या निपुणता प्राप्त की जाय। व्यापार, व्यवसाय में वे ही व्यक्ति अच्छी सफलता अर्जित करते हैं, जो मौखिक रूप से बातचीत द्वारा दूसरों को अधिक प्रभावित करे। साक्षात्कार में वे बालक सफलता अर्जित नहीं कर पाते जो सब कुछ जानते हुए भी अपने विचार या भावों को स्पष्ट प्रकट नहीं कर पाते हैं।

(7) मौखिक अभिव्यक्ति या वार्तालाप द्वारा बालक आत्म-अभिव्यक्ति में निपुणता प्राप्त कर लेते हैं।

(8) मौखिक शिक्षण कक्षा में सजीवता तथा रुचि उत्पन्न करता है, प्रश्नोत्तर द्वारा पढ़ाये पाठों में अधिक रुचि बालक दिखाते हैं।

(9) भाषण कला में निपुणता के लिए वार्तालाप में दक्षता हासिल कर अति आवश्यक है। बातचीत से सम्पर्क में आये व्यक्ति को प्रभावित किया जा सकता है तो भाषण द्वारा जनसमुदाय को। अतः वर्तमान में भाषण कला का भी अपना एक विशेष महत्व है।

(10) मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा बालक के व्यक्तित्व का विकास सम्भव है, कोई भी व्यक्ति मधुर, स्पष्ट तथा प्रभावी शब्दों द्वारा अपने व्यक्तित्व का प्रभाव दूसरों पर डाल सकता है।

(11) वार्तालाप द्वारा अर्जित भाषा मस्तिष्क पर अधिक दृढ़ रहती है। वह उसे भूलता नहीं है। अतः विद्यालय में लिखित कार्य की अपेक्षा मौखिक कार्य की अधिक आवश्यकता है।

Scanned with CamScanner